पुस्तक समीक्षा:

किन्नर जीवन का संवेदनात्मक आख्यान 'दरमियाना''(उपन्यास)

डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह

हिंदी साहित्य जगत में थर्ड जेंडरों की संचेतना पर आधारित उपन्यासों का सिलसिला बढ़ता जा रहा है। भगवंत अनमोल कृत जिंदगी 50-50 के तुरंत बाद सुभाष अखिल द्वारा उनकी 1980 में सरिता पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'दरमियाना'' का विस्तारित स्वरूप 38 वर्ष बाद उपन्यास के रूप में सन् 2018 में प्रकाशित हुआ है। ''यूं अन्य रचनाएं तो इधर-उधर छपने लगी थीं, मगर तत्कालीन प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'सारिका' के एक अक्टूबर 1980के अंक में दरमियाना को ससम्मा प्रकाशित किया गया।''(दरमियाना,पृ.8) इस कथन की पुष्टि चार-पांच उपन्यास लेखनाधीन या प्रकाशनाधीन हैं। इससे आशान्वित हुआ जा सकता है कि सदियों उपेक्षित और दमित हिजड़ा समुदाय के प्रति अब लेखनी के सिपाहियों में पहले की तुलना में अधिक जागरूकता है आ रही है।

सामाजिक रूप से भी विभिन्न राज्यों में किन्नरों के पुनर्वास या बेहतर जीवन के लिए एकाधिक योजनाएं लागू की जा रही हैं। पहले तो तमिलनाडु, केरल आदि राज्यों में ही इनके लिए योजनाएं देखी जा रही थी अब छत्तीसग़ढ़, ओडिशा राज्य भी अग्रणी हो रहे हैं। किन्नरों का छोटे छोटे पदों से लेकर न्यायाधीश, प्रोफेसर, जैसे पदों पर चयन तथा अखाड़ों के महंत बनना इस बहिस्कृत एवं परित्यक्त समाज के बेहतरी की ओर बढ़ने के संकेत हैं।

'दरमियाना' शब्द भी हिजड़ों के लिए प्रयोग लाए जाने वाला पर्याय है। सुभाष अखिल पेशे से पत्रकार रहे हैं और प्रस्तुत उपन्यास पत्रकारिता के अनुभवों के आधार पर लिखा गया है जिसके बीज लेखक के बचपन में तारा और रेशमा से सानिध्य के साथ पड़ गए थे। इस कथन की पुष्टि लेखक के शब्द स्वयं करते हैं -''सन 1978-79 में दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. के दौरान 'लेखन में हाथ मंज गया था.....और तभी एक कहानी का जन्म हुआ था- दरमियाना। इस कहानी की कथावस्तु ने न जाने कितने वर्ष लगाये होंगे रचना बनन के लिए। दरअसल, बचपन की वही जिज्ञासाएं मुझे बार-बार इनके करीब ले आईं।''(पृ.8) बचपन में एकबार जो लेखक के बचपन ने हिजड़ों या दरमियाना के जीवन में, चुहलबाजी की वजह से ही सही, झांका तो उपन्यास लेखन तक किसी न किसी रूप में दखल जारी है। तारा और रेशमा का लेखक से बचपन से दोनों के अंतिम झण तक जुड़ाव रहता है। इन्हीं के माध्यम से संध्या का प्रवेश लेखक के जीवन में होता है। आगे भी सुनंदा, नगमा,रेखा, दया मौसी आदि का प्रवेश लेखक के जीवन में हिजड़ों के परस्पर जुड़े होने के तारों के फलस्वरूप ही होता है। सम्पूर्ण उपन्यास का ताना बाना गाजियाबाद और दिल्ली के परिक्षेत्र में ही बुना गया है। प्रश्न व्यापक उठाए गए हैं तथा हिजड़ों के जीवन को बहुत ही जीवंतता के साथ प्रस्तुत तो किया गया परंतु कहानी या यूं कहा जाए कि कहानियों को सीमित रखा गया है तो गलत न होगा। उपन्यास कुल पांच कहानियों के माध्यम से समेटा गया है और सिवाय परिचय के स्तर को छोड़ दिया जाए तो किसी भी कहानी के किरदार का कोई परस्पर संबंध नहीं है। जो कि लेखक के पत्रकार होने के नाते विभिन्न प्रोजेक्टों की कवरेज का परिणाम हो सकते हैं।

प्रथम कहानी हिजड़ों के मानवता प्रेम और सद्भाव को प्रस्तुत करती है। दया का लेखक के प्रति पुत्रवत प्रेम तथा रेशमा का मर्यादापूर्ण प्रेमी स्वरूप लगाव हिजड़ों के सादगीपूर्ण जीवन को प्रस्तुत करता है। सगे संबंधी की तरह वह लेखक की गलत सोहबत से परेशानी होती है।"न जाने कैसे! तारा को पता चल गया कि मेरी बैठ-उठ अच्छी नहीं है। मेरी सोहबत में जुआरी शराबी बैठते हैं।.....तारा ने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, क्यों रे नट्टू, उसने नटराज को संक्षिप्त कर दिया था, मैं यह क्या सुन रही हूं?.....मुझे क्या पता तूने क्या सुना है। ....हरामजादे, तारा चीख उठी, तूने मुझे भी अपनी मां समझ लिया है क्या? तू क्या समझता है, अगर उसे बेवकूफ बना लेता है,तो मुझे भी बना लेगा?.....तू ये क्या हरकतें करने लगा है? मेरा नही ंतो कम से कम अपनी मां का ही ख्याल किया होता।"(पृ.19) तारा लेखक के गलत सौबत में पड़ जाने तथा चोरी करने की आदत जानकर बहुत दुखी होती है। माता पिता या सगे संबंधी की तरह दोनों लेखक को खूब लताड़ती हैं। दया और रेशमा उसे अपने-अपने स्तर पर समझाते हुए पढ़ाई में ध्यान देने के लिए कहती है और आवश्यता होने पर पढ़ाई के लिए पैसे आदि देने की खुली पेशकश करती है। लेखक द्वारा पढ़ाई के लिए खर्च के नाम बीयर पेने के लिए झूठ बोलकर पैसे लाने पर भी दोनों उससे बहुत नाराज होती हैं। इस घटना के बाद लेखक शर्म से लंबे अंतराल तक उन दोनों के सामने नहीं जा पाता है और दया के समक्ष तो उसकी मौत के बाद ही जा पता है। लेखक के पढ़लिखकर रिपोर्टर बनने जाने के बाद ही पुनः संबंध जुड़ पाता है। दया का पुत्र की तरह लगाव आम इंसानों के हिजड़ों के मध्य गहरी आंतरिकता और सद्आत्मभाव का परिचायक है। रेशमा के माध्यम से ही आगरा की संध्या से लेखक का परिचय होता है। संध्या, जो कि मूलतः शंकर होता है, का प्रवेश लेखक के जीवन में घरेलू स्तर तक हो जाता है और वह उसकी बहन के रूप में जुड़ जाती है। वह पुरूष के शरीर में कैद एक औरत होता है। "शरीर से औरत को गोश्त मानने वाले मर्द.....और मर्द को दैहिक जरूरत समझने वाली और--ये दोनों ही, इस तीसरे ठीक-ठीक नहीं समझ सकते।.....भैया, मेरी इसदेह में रूह एक स्त्री की है....मेरा मतलब मै। आत्मा से स्त्री हूं....और हूं एक ऐसे शरीर में--मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं क्या करूं?। आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, मैं नहीं जानती, मगर मैं सच कह रही हूं

मैं औरत हूं और वही होना चाहती है।''(पृ. 39) संध्या की कहानी में ''छिबरना या छिबराने'' की सत्यता या क्रूरता के विस्तारित एवं संवेदनात्मक विवरण मिलता है। गिरिया रखना और गुरू बदलने का दुष्परणिाम संध्या को झेलना पड़ता है क्योंकि उसका नया गुरू उसके अर्धविकिसित यौनांग को डॉक्टर द्वारा कटवा कर उसे छिबरा बना देता है परंतु चूंकि संध्या को हेमोफिलिया की बीमारी होती है जिसके कारण उसका रक्तस्राव रूकता नहीं है और अंततः उसकी मृत्यु के बाद कहानी का अंत होता है। इन दोनों कहानियों से लेखक व्यक्तिगत रूप से जुड़ा प्रतीत होता है परंतु इसके बाद की कहानियों प्रोफेशनल जीवन का हिस्सा कही जा सकती हैं।

तीसरी कहानी है में सुनंदा नामक किन्नर के माध्यम से जहां पहेली स्वरूप रहने वाले किन्नरों के व्यक्तिगत जीवन में झांकने का प्रयास किया है वहीं विभिन्न दवाओं का किन्नरों द्वारा उपयोग कर शारीरिक काया को बनाए रखना, गिरिया रखना, गिरयों के दबाव में उसी तरह जीवन जीना जैसा कि एक परिवार में पत्नी पति के दबाव में जीती है आदि के माध्यम से हिजड़े द्वारा लेखक से उसकी सलामती के लिए संबंध विच्छेद कर उसकी इज्जत एवं जान की रक्षा करने का त्याग करना हिजड़ों में नीहित मानवीयता का दर्शाया गया है। ''ये सभी, उतने सरल नहीं होते। अनके तरह की जटिलतओां में गड्डमड्ड होते हैं, जहां इनके व्यक्तित्व और जीवन को समझनर इनकी जटिलताओं के सिरे पकड़ पाना वाकई कठिन होता है।''(पृ.62)

चौथी कहानी कनाट पैलेस जैसे उच्च वर्गीय क्षेत्र में हिजड़ों की गंदी बस्ती होने के पीछे सभ्य और सुसभ्य समाज की एक और हकीकत को उजागर करती है तथा रेखा नामक हिजड़ें के माध्यम से हिजड़ों की सामान्य जीवन के प्रति ललक तथा विभिन्न माध्यमों से आय के स्रोत ढूंढ़ने एवं बढ़ाकर वैभवपूर्ण जीवन जीने की आकांक्षा को दर्शाती है। -''दिल्ली के दिल क्नाॅट प्लेस के आसपास का यह इलाका वी.वी.आई.पी. कहलता है। इसके एक तरफ राष्ट्रीय शान इंडिया गेट है, तो दूसरी तरफ कला और संस्कृति का क्षेत्र मंडी हाउस, जहां दूरदर्शन केंद से लेकर साहित्य, कला, नाट्य आदि से जुडत्रे अनके संस्थान और सभागार। .....आप इस सुपर वीवीआईपी एरिया के पास, सांगली मैस या प्रिंसि

पार्क जैसे इलाके को देख लें तो आपके होश फाख्ता हो जाएं।''(पृ.94) इसके साथ ही यह कभी किन्नरों परस्पर तनावों, झगड़ों तथा कभी कभार पास पड़ोस के अन्य गंुडों द्वारा हिजड़ों को गोली या अन्य माध्यमों से मार दिए जाने तथा उनके बाद उनके परिवार के अन्य सदस्यों को पूरी तरह से बेसहारा हो जाने की मार्मिक स्थिति को प्रकट करती है।

पांचवी कहानी दया मौसी नामक किन्नर की कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हिजड़ों का राजनीतिक में दखल, उनकी समाज सेवा की भावना तथा उनके लोक परोपकारी रूप का दिग्दर्शन कराती है। यहां भी हिजड़ों के गैंगवार या परस्पर रंजिश के कारण मर्डर किया जाना आदि बुराईयों का चित्रण किया गया है। ''ये राजनीति में अपने लिए नहीं करती बाबू।....हां आपने जो पिछली रिपोर्ट लिखी थी, वह बहुत सही लिखी थी।...सच ही लिखा था आपने कि मै अपने समजा के लिए कुछ करना चाहती हूं.....बाकी समाज को ता इन नेताओं ने बांट ही रखा है।। पहले हिंदीू मुसलमान में बांटा । फिर हिंदुओं को हिंदुंओं मे....और मुसलमानों को मुसलमानों में बांटा। दलितों, पिछड़ों अति पिछड़ों---और न जाने किस किस में बांट दिया।''(पृ.121)

वैसे सीधे तौर पर उपन्यास की पांचों कहानियों में कोई नैरंतर्य परिलक्षित नहीं होता है परंतु पांचों कहानियों में वर्णित किन्नर जीवन की दास्तां जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत पारिवारिक कलह,अवहेलना, तिरस्कार से लेकर परिवारीजनों का प्रेम, लगाव, त्याग आदि के साथ-साथ प्रतिदिन का जीवन संघर्ष किन्नरों मध्य गैंगवार, जीने के लिए मुंह बोले रिश्तों के प्रति जन्मजात रिश्तों से बढ़कर समर्पण, पुरूष के सहारे के रूप में गिरिया पालना तथा उसकी गिरफ्त में रहना तथा उसके अत्याचार झेलना। कभी कभी गिरियों का परित्याग, भाई बहनों तथा बुजुर्गवारों की परवरिश का जज्बा तथा अंतर्मन से परिजनों की तिरस्कृत भावनाओं एवं व्यवहार के बाद भी दायित्वों के निर्वहन की भावना आदि सभी कहानियों को परस्पर जोड़कर एक औपन्यासिक रूप देती हैं। लेखक सर्वत्र उपस्थित हैं और इसे रिपोर्ताज सह संस्मरणात्मक शैली की रचना कहा जा सकता है। भाषा शैली की दृष्टि से हिजड़ों के मध्य प्रयोग में लाई जाने वाली

भाषा के कुछ कूट शब्दों का प्रयोग छोड़ दें तो वर्णनात्मक शैली का उपयोग किया गया है।

समीक्षित कृति –

विधा – उपन्यास

पुस्तक का नाम – दरमियाना

लेखक - सुभाष अखिल

प्रकाशक एवं प्रकाशन वर्ष- अमन प्रकाशन कानपुर, 2018